अनुबोधन, खण्ड 1, अंक 4, दिसम्बर 2025, पृष्ठ 49–61
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट), 3108-1185 (ऑनलाइन)
प्रकाशित: 31 दिसम्बर 2025
जर्नल वेबसाइट: **https://anubodhan.org**
DOI: 10.65885/anubodhan.v1n4.2025.030

स्वामी विवेकानंद जी के शिक्षा संबंधी विचारों का अध्ययन

अनन्त कुमार*

सारांश

स्वामी विवेकानंद जी का स्पष्ट मत है कि ज्ञान बाहर से नहीं आता बल्कि वह तो मनुष्य के भीतर ही होता है। इस अंतर निहित ज्ञान अथवा पूर्णता की अभिव्यक्ति करना ही शिक्षा है। लौकिक तथा आध्यात्मिक सभी प्रकार का ज्ञान मनुष्य के मन में पहले से ही विद्यमान रहता है। अतः शिक्षा को मनुष्य के अंदर निहित ज्ञान अथवा पूर्णता की अभिव्यक्ति करनी चाहिए।

विवेकानंद जी के अनुसार भारत के पिछड़े पान का सबसे बड़ा कारण उसका बौद्धिक पिछलापन नहीं है और इस कमी को दूर करने के लिए बालकों का मानसिक तथा बौद्धिक विकास किया जाए ताकि वह अपने पैरों पर खड़े हो सके और जीवन की चुनौतियों का बहादुरी से सामना कर सकें।

स्वामी जी के अनुसार सभी प्रकार के क्रियाकलाप एवं सभी प्रकार के आयोजन या प्रबंधन या नीति निर्माण का मूल उद्देश्य मनुष्य को मानवता की शिक्षा देना ही है ताकि वह अपने साथ-साथ अपने परिवार समाज राष्ट्र एवं विश्व के लिए कल्याणकारी हो सके अर्थात शिक्षा का मूल उद्देश्य मनुष्य का निर्माण करना है।

स्वामी जी का स्पष्ट मत है कि मानसिक एवं शारीरिक विकास के साथ-साथ व्यक्ति का चरित्र उच्च कोटि का होना चाहिए तभी वह समाज में एवं स्वयं के भीतर भी सच्चा बदलाव ला सकता है । वह स्वयं कहते हैं कि "हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।"

महात्मा गांधी भी बलपूर्वक कहते हैं कि "सच्ची शिक्षा वह है जो स्वतंत्रता का मार्ग

*शोधार्थी, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, E-mail: anantkummartiwari@gmail

प्रशस्त करती है। केवल वही उच्च शिक्षा है जो हमें अपने धर्म का संरक्षण करने के लिए समर्थ बनती है । पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृत के अंधा अनुकरण के कारण भारतीय शिक्षा में विदेशी पान का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। एसएससी भारत का उत्थान संभव नहीं है। मां-बाप आचार्य सब ने प्राचीन आदर्श और मूल्यों का परित्याग कर दिया है जिसकी कारण विद्यार्थियों में भी मूल्य बोध का ह्रास हुआ है।"

प्रस्तावना

19वीं सदी के उत्तरार्ध के भारतीय नवजागरण के अग्रणी नेताओं में स्वामी विवेकानंद का स्थान सबसे शीर्ष पर है। स्वामी विवेकानंद का जन्म सन 1863 में कोलकाता में हुआ था। उनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त था। विवेकानंद जी का बचपन का नाम नरेंद्र था । विवेकानंद जी ने भारतीय धर्म दर्शन योग वेदांत आदि से संबंधित अनेक विषयों पर व्याख्यान दिए और लेख लिखिए जिनका पुस्तकों का रूप भी दिया गया है। इतिहासकार एक मत से इस बात को मानते हैं कि 20वीं साड़ी के शुरुआत में राष्ट्रीय आंदोलन में आए नए मोड में स्वामी जी के कार्यों और संदेश का बड़ा योगदान है। विवेकानंद जी द्वारा भारत की गरिमा को पुनः जगाने का प्रयास मात्र राजनीतिक दासत्व की समाप्ति के लिए नहीं था।

विवेकानंद जी का स्पष्ट मानना था की क्षमता का सिद्धांत कोई मंत्र बौद्धिक विश्वास ही नहीं उनके हर प्रयास का प्रेरक था। हुए ऐसे किसी भी प्रयास में भाग नहीं लेते थे जिस दिन दुखियो की दशा में सुधार न हो। अपने अनुयायियों से उन्होंने बार-बार कहा कि हमारा राष्ट्र तो झोपड़िया में निवास करता है जब तक गरीबों की स्थिति में सुधार नहीं होगा तब तक राष्ट्र की अवस्था में सुधार असंभव है। विवेकानंद जी के अनुसार भारत एवं भारतीयों की सच्ची प्रगति का मार्ग शिक्षा के द्वारा ही संभव है। वे चाहते थे कि उनके अनुयाई गांव-गांव फैल जाए और गरीबों को बिना किसी भेदभाव के शिक्षित करें। एक शिक्षित व्यक्ति अपने लिए सुख पूर्ण जीवन का मार्ग स्वयं ही ढूंढ लेगा एवं समाज के लिए भी सुखी पूर्वक जीने का मार्ग प्रशस्त करेगा।

शिक्षा के दार्शनिक आधार

स्वामी विवेकानंद वेदांत दर्शन में विश्वास करते थे। वेदांत के तीन रूप हैं द्वैत, विशिष्टा- द्वैत और अद्वैत । उनके अनुसार ईश्वर सर्वशक्तिमान निराकार और एक है। स्वामी जी अद्वैतवादी हैं। स्वामी जी के अनुसार मनुष्य में ईश्वरी सट्टा की अधिकतम अभिव्यक्ति मिलती है। उनके अनुसार मनुष्य परमात्मा का अंश है तथा मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है। मानव की सच्ची प्रकृति आध्यात्मिक ही है वह ईश्वर की सर्वोच्च रचना है उसमें जन्म से ही पूर्णता विद्यमान रहती है और उसमें आध्यात्मिक स्वरूप को समझने की अद्‌भुत शक्ति होती है। स्वामी विवेकानंद जी का मानना है कि ईश्वर अनंत अस्तित्व, अनंत ज्ञान और अनंत आनंद है ।यह तीनों एक ही है।

यह बात स्पष्ट है कि स्वामी जी ईश्वरी सत्ता में विश्वास करते थे। स्वामी जी सृष्टि के करता ब्रह्मा को मानते थे किंतु वे माया और जगत को भी सत्य मानते थे। भला सत्य से सत्य की उत्पत्ति कैसे हो सकती है? वे वस्तु जगत तथा आत्मा में भी विश्वास करते थे तथा मनुष्य का अंतिम उद्देश्य आत्मा अनुभूति ईश्वर की प्राप्ति तथा मोक्ष है।

स्वामी जी के शब्दों में "बिना ज्ञान और प्रेम के अस्थाई तो नहीं हो सकता ज्ञान बिना प्रेम और प्रेम बिना ज्ञान की नहीं हो सकता हमें अस्थाई ज्ञान और आनंद की अनंतताओं में साम्य की आवश्यकता है।"

स्वामी जी ज्ञान को मुख्यतः दो रूपों में विभाजित करते हैं वास्तु जगत का ज्ञान तथा आत्म तत्व का ज्ञान। मनुष्य को इन दोनों प्रकार की ज्ञान को प्राप्त करना चाहिए। वस्तु जगत के ज्ञान से इनका अभिप्राय भौतिक ज्ञान से है जिसमें वस्तुओं एवं क्रियाओं के ज्ञान को रखा जाता है और आत्म तत्व का ज्ञान से इनका आशय आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति से है जिसमे परमात्मा आत्मा और जीवात्माओं के ज्ञान को सम्मिलित किया जाता है।

स्वामी जी मानव को ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट रचना मानते थे पूर्वी राम स्वामी जी मानव जीवन में निर्भयता सत्यता और स्वतंत्रता को आवश्यक मानते थे। उन्होंने हृदय की शुद्धता और सत्यता पर बोल दिया है । वह कहते थे कि ईश्वर हृदय के माध्यम से ही हमको संदेश देता है इसलिए मनुष्य मात्र

को उन्होंने यह संदेश दिया था-" तुम वीर बनो तुम निर्भय बनो भाई को दूर करो भाई पाप है उनका जीवन में कोई स्थान नहीं है।"

मनुष्य की आचरण के संबंध में स्वामी जी का स्पष्ट मत है कि मनुष्य को सदैव सत्य का पालन करना चाहिए। स्वामी जी के अनुसार मानव को मन वचन एवं कम से शुद्ध होना चाहिए अपनी जीव का ईमानदारी से कमानी चाहिए दरिद्र नारायण की सेवा करनी चाहिए और इस प्रकार अपने को शुद्ध एवं निर्मल बनाकर योग साधना के योग्य बनना चाहिए और किसी भी योग मार्ग द्वारा आत्म अनुभूति करनी चाहिए।

शैक्षिक चिन्तन

स्वामी विवेकानन्द जी भी अन्य शिक्षा शास्त्रियों की भाँति एक महान दार्शनिक थे और एक दार्शनिक होने के नाते उन्होंने अपने दर्शन के अनुकूल शैक्षिक विचार प्रस्तुत किये हैं । इन्हीं शैक्षिक विचारों के कारण उनकी गणना महान शिक्षा शास्त्रियों में की जाती है। उन्होंने अपने काल की शिक्षा का विरोध किया और उसे निषेधात्मक एवं भावात्मक बताया। उन्होंने बताया कि विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा मनुष्य बनाने वाली शिक्षा नहीं है । वह कुछ भी नहीं सिखाती। केवल जानकारियों का ढेर देती है जो आत्मसात हुए बिना मस्तिष्क में पड़ा रहता है। यह शिक्षा जन-समुदाय को जीवन-संग्राम उपयुक्त नहीं बनाती। उनकी चारित्र्य-शक्ति का विकास नहीं करती। उनके अन्दर दया का भाव और सिंह का साहस उत्पन्न नहीं करती। ऐसी शिक्षा निरर्थक है। हमें तो ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र निर्माण हो, मानसिक विकास बढ़े, बुद्धि का विकास हो और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो और जो भावों और विचारों को आत्मसात कराये । उनके कथानुसार शिक्षा का अर्थ दूसरों के विचारों को रट लेना नहीं है, वरन् शिक्षा का अर्थ मनुष्य बनाना है। उसका विकास करना है, निर्माण करना है। उनका कहना है कि हमें तो ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिससे उद्योग-धन्धों की वृद्धि एवं विकास ही, मनुष्यों व्यवसाय ढूँढने के बदले आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कमाई कर सके और आपत्ति काल के लिए कुछ संचय कर सके। उनका स्पष्ट मना था कि शिक्षा का अर्थ दूसरों के

विचारों को रात लेना नहीं है अपितु शिक्षा का अर्थ मनुष्य बनाना है। स्वामी जी का मानना था कि कोई भी व्यक्ति किसी व्यक्ति को कुछ भी सीखा नहीं सकता है।एकाग्रता की शक्ति जितनी अधिक होगी ज्ञान की प्राप्ति भी उतनी ही अधिक होगी। अतः प्रत्येक कार्य की सफलता इसी पर निर्भर करती है। स्वामी जी के अनुसार शिक्षा से आशय-

"यदि शिक्षा का अर्थ सूचनाओं से होता तो पुस्तकालय संसार के सर्वश्रेष्ठ संत होते तथा विश्व कोष ऋषि बन जाते।"

उनके अनुसार, "शिक्षा उसे सन्निहित पूर्णता का प्रकाश है जो मनुष्य में पहले से ही विद्यमान है।"

" Education is the manifestation of the perfection, already present in man." - Swami Vivekanand

शिक्षा के उद्देश्य

स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

(1) अन्तर्निहित पूर्णता को प्राप्त करना : स्वामी जी के अनुसार ज्ञान बाहर से नहीं आता बल्कि वह तो मनुष्य के भीतर ही होता है। इस अन्तनिर्हित ज्ञान अथवा पूर्णता की अभिव्यक्ति करना ही शिक्षा है। लौकिक तथा आध्यात्मिक सभी प्रकार का ज्ञान मनुष्य के मन में पहले से ही विद्यमान रहता है। उस पर पड़े आवरण को हटा देना ही शिक्षा है। अतः शिक्षा को मनुष्य के अन्तर्निहित ज्ञान अथवा पूर्णतत्व की अभिव्यक्ति करनी चाहिए।

(2) शारीरिक विकास : स्वामी जी लौकिक तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकार के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए स्वस्थ शरीर की आवश्यकता समझते थे। उनका कहना था कि हमें ऐसे बलिष्ठ लोगों की आवश्यकता है जिनकी पेशियाँ लोहे के समान दृढ़ हों और स्नायु फौलाद की तरह कठोर। उनके विचारानुसार शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य मनुष्य का शारीरिक विकास करना है।

(3) मानसिक एवं बौद्धिक विकास : विवेकानन्द के अनुसार भारत के पिछड़ेपन का सबसे बड़ा कारण उसका बौद्धिक पिछड़ापन है। इसो कमी को दूर करने के लिए इस बात की आवश्यकता है कि शिक्षा द्वारा बालकों का मानसिक तथा बौद्धिक विकास किया जाये, ताकि वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें।

(4) मनुष्य का निर्माण करना : स्वामी जी के अनुसार सभी प्रकार की शिक्षा और अभ्यास का उद्देश्य मनुष्य का निर्माण है ।। सारे प्रशिक्षणों का अन्तिम ध्येय मनुष्य का विकास करना है। जिस अभ्यास से मनुष्य की इच्छा शक्ति का प्रवाह और प्रकाश संयमित होकर फलदायी बन सके उसी का नाम शिक्षा है। वे सर्वत्र, सभी क्षेत्रों में 'मनुष्य' बनाने वाली शिक्षा ही चाहते थे।

(5) चरित्र-निर्माण : मानसिक एवं शारीरिक विकास के साथ उन्होंने शिक्षा का उद्देश्य चरित्र-निर्माण भी बताया। इसके लिए उन्होंने पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करने का सुझाव दिया। ऐसा करने से व्यक्ति मन, वचन और कर्म से पवित्र बनता है, उसमें प्रबल बौद्धिक एवं आध्यात्मिक शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं जिसके द्वारा उसके चरित्र-निर्माण में सहायता मिलती है। वह स्वयं कहते हैं कि- "हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है, जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।"

(6) धार्मिक विकास : विवेकानन्द चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति उस सत्य अथवा धर्म को मालूम कर सके, जो उसके अन्दर छिपा हुआ है। इसके लिए उन्होंने मन तथा हृदय के प्रशिक्षण पर बल दिया और बताया कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसके द्वारा बालक में आज्ञा-पालन, समाज-सेवा एवं महात्माओं के अनुकरणीय आदर्शों को अपनाने की क्षमता का विकास हो सके। शिक्षा ऐसी हो जो प्रत्येक मनुष्य को पूजा-पाठ करने के लिए प्रेरित करे जिससे वह अपने जीवन को पवित्र बना सके। अतः सत्य एवं सनातन

तत्वों को जनता के सामने रखना, उन्हें समझाना, उनका विकास करना शिक्षा का उद्देश्य है।

(7) राष्ट्रीयता का विकास : स्वामी जी ने शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य बालकों में देश प्रेम की भावना का विकास करना बताया। उनका विचार था कि जो शिक्षा देश भक्ति की प्रेरणा नहीं देती, वह राष्ट्रीय शिक्षा नहीं कही जा सकती है।

(8) समाज सेवा और विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास : विवेकानन्द जी सभी मनुष्य में एक आत्मा (ब्रह्म) के दर्शन करते थे और मनुष्य के शरीर को उसका मन्दिर मानते थे। अतः भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से मनुष्य को समाज-सेवा का पाठ पढ़ाना चाहिए, ऐसा वह चाहते थे। वह मानते थे कि शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मनुष्य में समाज-सेवा की भावना के साथ ही विश्व-बन्धुत्व की भावना का विकास करना भी है।

(9) आत्म-विश्वास, श्रद्धा एवं आत्म-त्याग की भावना का विकास : स्वामी जी ने जीवन पर्यन्त इस बात पर बल दिया कि अपने ऊपर विश्वास रखना, श्रद्धा तथा आत्मत्याग की भावना को विकसित करना शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। आपने लिखा है-"उठो! जागो और उस समय तक बढ़ते रहो जब तक कि चरम उद्देश्य की प्राप्ति न हो जाये।"

शिक्षा का पाठ्यक्रम

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, "हमें अपने ज्ञान के विभिन्न अंगों के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा और पाश्चात्य विज्ञान का अध्ययन करने की आवश्यकता है। हमें प्राविधिक शिक्षा और उन सभी विषयों का ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता है, जिनसे हमारे देश के उद्योगों का विकास हो और मनुष्य नौकरियाँ खोजने के बजाय अपने स्वयं के लिए पर्याप्त धन का अर्जन कर सकें और दुर्दिन के लिए कुछ बचा भी सके।"

स्वामी जी के शैक्षिक विचार के अनुसार पाठ्यक्रम विकास के निम्नलिखित सिद्धान्त होने चाहिए-

1. पाठ्यक्रम ऐसा हो जिसमें शारीरिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक शक्ति का विकास हो। 2. पाठ्यक्रम ऐसा हो जो किसी रोजगार की शिक्षा दे।

3. विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुसार पाठ्यक्रम में परिवर्तन किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम में विज्ञान की शिक्षा को सम्मिलित किया जाये। 4. 6. पाप्यक्रम में क्रियात्मक कार्यों को स्थान दिया जाये ।

सार रूप में स्वामी जी ने उन सभी विषयों के अध्ययन पर बल दिया जो मनुष्य की सांसारिक समृद्धि और आध्यात्मिक उन्नति के लिए आवश्यक हैं। लौकिक विषय- भाषा, विज्ञान, मनोविज्ञान, गृहविज्ञान, प्राविधिक विषय, कृषि, व्यवसायिक विषय, इतिहास, भूगोल, कला, गणित, राजनीति, अर्थशास्त्र, खेल-कूल, व्यायाम, समाज-सेवा तथा राष्ट्र सेवा । आध्यात्मिक विषय हैं-दर्शन, पुराण, धर्म, उपदेश, भजन, कीर्तन, श्रवण तथा साधु संगति ।

शिक्षण विधि (Teaching Methods)

शिक्षण विधि के सम्बन्ध में स्वामी जी का विचार था कि धर्म की विशेष पद्धति द्वारा शिक्षा देनी चाहिए। धर्म, शिक्षण विधि का आधार होना चाहिए। इस दृष्टिकोण से शिक्षण विधि पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा है कि "ज्ञान प्राप्त करने की सबसे उत्तम विधि एकाग्रता है। मन की एकाग्रता में शिक्षा का सार है। ज्ञानार्जन के लिए निम्नतम श्रेणी के मनुष्य के लेकर उच्चतम योगी तक को इस विधि का अवलम्बन करना पड़ता है।" अतः केन्द्रीयकरण-विधि (Method of concentration) द्वारा मन को एकाग्र करना चाहिए।

स्वामी जी का विचार था कि पुस्तकें पढ़ने की अपेक्षा सुनने और देखने से अधिक ज्ञान प्राप्त हो सकता है। इसलिए उन्होंने कहानियाँ सुनना, भ्रमण

करना, तर्क अथवा विचार-विमर्श तथा धर्मोपदेश सुनना आवश्यक बताया। उनके अनुसार जन्म भर पुस्तकों के द्वारा जो जानकारी प्राप्त हो सकती है, उससे सौ गुना अधिक कार्यों के द्वारा सिखाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त उन्होंने स्वानुभव द्वारा एवं रचनात्मक कार्यों द्वारा ज्ञान ग्रहण करने पर भी बल दिया। उनके विचारानुकूल यदि भाषा और साहित्य में, काव्य और कला में तथा अन्य विषयों में केवल सूचनायें न देकर बालकों को सुचारू रूप से कार्य करने का मार्ग दिखाया जाये तो अधिक श्रेयकर होगा। उन्होंने अनुकरण विधि को उपयोगी बताया। उनका विचार था कि अनुकरण विधि द्वारा चारित्रिक विकास एवं आध्यात्मिक विकास सम्भव है। उन्होंने परामर्श विधि एवं व्यक्तिगत निर्देशन विधि का भी समर्थन किया, क्योंकि उनके मतानुकूल बालक को इन विधियों द्वारा उचित मार्ग पर अग्रसर किया जा सकता है।

अध्यापक (Teacher)

स्वामी जी ने शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान अत्यन्त ही महत्वपूर्ण माना है। उनके अनुसार अध्यापक में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है-

1. स्वामी जी चाहते थे कि बालकों को लौकिक तथा आध्यात्मिक (पारलौकिक) दोनों करने हेतु दोनों प्रकार का ज्ञान होना चाहिए।

2. शिक्षक संयमी, आत्मज्ञानी, परिश्रमी, एवं उच्च चरित्र वाला हो, जिससे बालक उसका अनुकरण कर आदर्श मानव बन सकें।

3. शिक्षक वैयक्तिक भिन्नता के आधार पर बालकों को शिक्षा प्रदान करे।

4. शिक्षक को बालक से निकट, घनिष्ठ और व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए। 5. शिक्षक को बालक को संसार के प्रति उचित दृटिकोण का निर्माण करने में सहायता देनी चाहिए।

स्वामी जी के शब्दों में, "वास्तव में, किसी को, किसी के द्वारा कभी शिक्षा नहीं दी गई है। हममें से प्रत्येक को अपने-आपको शिक्षा देनी पड़ती है। बाह्य शिक्षक केवल ऐसे सुझाव देता है, जिससे आत्मा कार्य करने और समझने के लिए चैतन्य हो जाती है।"

छात्र (Student)

स्वामी जी के अनुसार गुरु शिष्य का सम्बन्ध केवल सांसारिक ही नहीं होना चाहिए, वरन् उन्हें एक दूसरे के दिव्य स्वरूप को भी देखना चाहिए।'

विवेकानन्द के अनुसार ज्ञान चाहे भौतिक हो या आध्यात्मिक, उसको प्राप्त करने के लिए शिक्षार्थियों द्वारा ब्रह्मचर्य का पालन करना अनिवार्य है। ब्रह्मचर्य के पालन द्वारा ही वह अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखता है, उसमें सीखने की प्रबल इच्छा उत्पन्न होती है और वह गुरु में श्रद्धा के भाव रखते हुए सत्य को जानने का प्रयत्न करता है, तभी वह ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

विद्यालय (School)

वैसे तो विवेकाननद जी गुरु गृह प्रणाली के पक्षधर थे। वे यह अनुभव करते थे कि आधुनिक परिस्थितियों में विद्यालय प्रकृति की गोद में, शहर के कोलाहल से दूर नहीं बसाये जा सकते। अतः उन्होंने इस बात पर बल दिया कि विद्यालय का पर्यावरण शुद्ध होना चाहिए और वहाँ अध्ययन-अध्यापन, खेल-कूद, व्यायाम के अतिरिक्त भजन-कीर्तन एवं ध्यान की क्रियायें भी सम्पन्न कराई जायें ।सम्पूर्ण मानव के निर्माण के लिए शिक्षण संस्थाओं एवं इनमें कार्यरत शिक्षकों, कर्मचारियों एवं छात्रों के उत्तरदायित्व तथा उनकी सहभागिता को स्पष्ट करने के लिए विवेकानंद जी ने बहुत पत्र लिखे हैं, इन पत्रों की महत्ता को स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं, "मेरी हार्दिक इच्छा है कि इन पत्रों को लिखता रहूँ ताकि उन्हें बता सकूँ कि विद्यालयों को कैसा होना चाहिए?" उन सभी व्यक्तियों को जिनके

कंधों पर इनका उत्तरदायित्व है उन्हें बता सकूं कि विद्यालयों को केवल शैक्षिक रूप से ही श्रेष्ठ नहीं होना है, बल्कि बहुत कुछ और भी करना है। वस्तुतः इन को सम्पूर्ण मानव से जुड़ना है। शिक्षा के इन केन्द्रों को चाहिए कि वे शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को सहज रूप से प्रस्फुटित होने में सहायता करें।

जन-शिक्षा (Mass-Education)

स्वामी जी जन-शिक्षा पर अत्यधिक बल देते थे। देश के पुनरुत्थान के लिए जनसाधारण की शिक्षा को अनिवार्य बताते हुए उन्होंने लिखा है, "मेरे विचार से जन साधारण की अवहेलना करना महान राष्ट्रीय पाप और हमारे पतन का कारण है। जब तक भारत की सामान्य जनता को एक बार फिर अच्छी शिक्षा, अच्छा भोजन और अच्छी सुरक्षा नहीं प्रदान की जायेगी, तब तक अधिक से अधिक राजनीति भी व्यर्थ होगी। वे हमारी शिक्षा के लिए धन देते हैं, वे हमारे मन्दिरों का निर्माण करते हैं, पर इनके बदले में उन्हें मिलता क्या है? मात्र ठोकरें । वे हमारे दासों के समान हैं। यदि हम भारत का पुनरुत्थान करना चाहते हैं, तो हमें उनको शिक्षित करना होगा ।"

उन्होंने कहा कि जनसाधारण की शिक्षा उनकी निजी भाषा में होनी चाहिए। उनका विचार है कि यदि गरीब बालक शिक्षा लेने नहीं आ सकता है, तो शिक्षा को उसके पास पहुँचाना चाहिए (स्वामी जी सुझाव देते हैं कि यदि सन्यासियों में से कुछ को धर्म सम्बन्धी विषयों की शिक्षा देने के लिए संगठित कर लिया जाये, तो बड़ी सरलता से घर-घर घूमकर वे अध्यापन तथा धार्मिक शिक्षा-दोनों काम कर सकते हैं। कल्पना कीजिए कि दो सन्यासी कैमरा, ग्लोब और कुछ मानचित्रों के साथ संध्या समय किसी गांव में पहुँचे। इन साधनों के द्वारा वे जनता को भूगोल, ज्योतिष आदि की शिक्षा देते हैं। इसी प्रकार कथा-कहानियों के द्वारा दूसरे देश के सम्बन्ध में अपरिचित जनता को वे इतनी बातें बताते हैं, जितनी वे पुस्तक द्वारा

अपने जीवन भर में भी नहीं सीख सकते हैं क्या इन वैज्ञानिक साधनों द्वारा आज की जनता के अज्ञानमय अंधकार को शीघ्र दूर करने का यह एक उपयुक्त सुझाव नहीं है? क्यों सन्यासी स्वयं इस लोक-सेवा द्वारा अपनी आत्मा की ज्योति को अधिक प्रदीप्त नहीं कर सकते हैं?

अनुशासन

विवेकानंद जी गुरु ग्रह प्रणाली के पक्षधर थे। वह यह अनुभव करते थे कि आधुनिक परिस्थितियों में विद्यालय प्रकृति की गोद में यानी शहर के कोलाहल से दूर नहीं बसाया जा सकते हैं इसलिए उन्होंने इस बात पर बोल दिया कि विद्यालय का पर्यावरण शुद्ध होना चाहिए और वहां अध्ययन ,अध्यापन ,खेलकूद और व्यायाम के साथ साथ भजन कीर्तन की भी व्यवस्था होनी चाहिए। हालांकि विवेकानंद जी आदर्शवादी थे परंतु उनके अनुशासन संबंधी विचार प्रकृति वादी से मिलते जुलते हैं। उनका मानना है कि ना तो बालक को किसी प्रकार का शारीरिक दंड देना चाहिए अन्य शिक्षा के लिए उसे पर अनुचित दबाव डालना चाहिए। क्योंकि स्वतंत्रता उन्नत की प्रथम सामग्री है इसलिए बालकों को सीखने के लिए पर्याप्त स्वतंत्रता देनी चाहिए। उन पर कठोर नियंत्रण नहीं रखना चाहिए अपितु सहानुभूति के साथ उन्हें सीखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और स्वानुशासन की शिक्षा देनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. विवेकानंद साहित्य, अद्वैत आश्रम, कोलकाता

2. ब्रह्मचारी अमल, स्वामी विवेकानंद जीवन और उपदेश

3. स्वामी विवेकानंद, व्यक्तित्व का विकास

4. स्वामी विवेकानंद, हम क्या चाहते हैं

5. स्वामी विवेकानंद, मेरा भारत अमर भारत, रामकृष्ण मठ, नागपुर

6. स्वामी विवेकानंद, हिंदू धर्म, रामकृष्ण मठ, नागपुर

7. प्रयाग नारायण त्रिपाठी, स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन

8. स्वामी गंभीरानंद, युगनायक विवेकानंद, रामकृष्ण मठ, नागपुर

9. विवेकवादी स्वामी विवेकानंद की शिक्षाएं, रामकृष्ण मठ, नागपुर

10. त्रिभुवन कुमार गर्ग (सं), स्वामी विवेकानंद: सूक्तियां एवं उपदेश

Copyright © 2025 Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).